संविधान शिल्पी भारत रत्न श्रद्धेय बाबासाहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर जी की 136 वीं जयंती

बाबा साहेब का विचार, नरेंद्र मोदी का नेतृत्व और विकसित भारत का संकल्प

संविधान शिल्पी भारत रत्न श्रद्धेय बाबासाहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर जी की 136 वीं जयंती केवल एक ऐतिहासिक तिथि नहीं, बल्कि भारत की आत्मा का उत्सव है। यह वह दिन है, जब हम उस महापुरुष को स्मरण करते हैं, जिन्होंने सदियों की सामाजिक विषमता को चुनौती दी और एक ऐसे भारत की नींव रखी, जहाँ न्याय, समानता और गरिमा प्रत्येक नागरिक को समान अधिकार हो। बाबा साहेब का जीवन संघर्ष, ज्ञान और संकल्प का अद्वितीय उदाहरण है—एक ऐसा जीवन, जिसने विपरीत परिस्थितियों में भी शिक्षा और आत्मसम्मान की मशाल को कभी बुझने नहीं दिया।

डॉ. अंबेडकर का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वे केवल संविधान निर्माता ही नहीं, बल्कि एक बड़े अर्थशास्त्री, श्रेष्ठ विधिवेत्ता, महान समाज सुधारक और दूरदर्शी राष्ट्रनिर्माता थे। उन्होंने यह स्पष्ट रूप से समझा था कि यदि भारत को एक सशक्त राष्ट्र बनाना है, तो केवल राजनीतिक स्वतंत्रता पर्याप्त नहीं होगी; इसके साथ-साथ सामाजिक और आर्थिक न्याय भी सुनिश्चित करना होगा। यही कारण है कि उन्होंने संविधान में ऐसे प्रावधानों को शामिल किया, जो समाज के अंतिम व्यक्ति को भी समान अवसर और अधिकार प्रदान करते हैं।

उनकी दूरदर्शिता का एक और महत्वपूर्ण पहलू था—मजबूत संस्थाओं का निर्माण। बाबा साहेब का मानना था कि किसी भी राष्ट्र की स्थिरता और प्रगति उसकी संस्थागत संरचना पर निर्भर करती है। वित्त आयोग, भारतीय रिजर्व बैंक, रोजगार कार्यालयों और श्रम नीतियों की जो बुनियाद उन्होंने रखी, वह आज भी भारत की आर्थिक व्यवस्था को मजबूती प्रदान कर रही है। उनकी सोच केवल वर्तमान तक सीमित नहीं थी, बल्कि उन्होंने आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक मजबूत आधार तैयार किया।

इतना ही नहीं, बहुत कम लोग जानते हैं कि डॉ. अंबेडकर की डॉक्टरेट थीसिस ने भारत में वित्त आयोग की स्थापना की नींव रखी और उनके विचारों ने 1934 के आरबीआई अधिनियम के निर्माण को दिशा दी। उन्होंने राष्ट्रीय विद्युत ग्रिड, दामोदर घाटी परियोजना, हीराकुंड बांध और सोन नदी परियोजना जैसे बड़े बुनियादी ढांचों के विकास को प्राथमिकता दी, यह योजनाएँ इस बात का प्रमाण हैं कि वे केवल सामाजिक न्याय के ही नहीं, बल्कि आर्थिक विकास और राष्ट्र निर्माण के भी अग्रदूत थे। आज जब भारत बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में तेजी से प्रगति कर रहा है, तब यह स्पष्ट होता है कि हम उसी मार्ग पर आगे बढ़ रहे हैं, जिसकी दिशा बाबा साहेब ने दशकों पहले तय की थी।

बाबा साहेब का सबसे बड़ा सपना था—एक ऐसा भारत जहाँ कोई भी व्यक्ति जाति, वर्ग, लिंग या जन्म के आधार पर भेदभाव का शिकार न हो। उन्होंने सामाजिक न्याय को केवल एक नारा नहीं, बल्कि शासन और समाज का मूल सिद्धांत बनाने का प्रयास किया। उनका मानना था कि राजनीतिक स्वतंत्रता तभी सार्थक है, जब सामाजिक और आर्थिक समानता भी सुनिश्चित हो।

बाबा साहेब का सबसे बड़ा योगदान यह था कि उन्होंने समाज के वंचित, शोषित और पिछड़े वर्गों को मुख्यधारा में लाने का प्रयास किया। उनका संघर्ष केवल अधिकारों के लिए नहीं था, बल्कि आत्मसम्मान के लिए था। उन्होंने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का सबसे बड़ा माध्यम माना और दलितों तथा वंचितों को उच्च शिक्षा के लिए प्रेरित किया। उनका यह विश्वास था कि जब तक व्यक्ति शिक्षित नहीं होगा, तब तक वह अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं हो सकता।

आज जब हम वर्तमान भारत की ओर देखते हैं, तो पाते हैं कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश उसी दिशा में आगे बढ़ रहा है, जिसकी परिकल्पना बाबा साहेब ने की थी। 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास' केवल एक नारा नहीं, बल्कि शासन की कार्यप्रणाली का आधार बन चुका है। अंत्योदय की भावना के साथ सरकार यह सुनिश्चित कर रही है कि विकास का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे।

मोदी सरकार ने आर्थिक समावेशन के क्षेत्र में जो ऐतिहासिक कार्य किए हैं, वे बाबा साहेब के आर्थिक चिंतन का जीवंत उदाहरण हैं। जनधन योजना के माध्यम से करोड़ों लोगों के बैंक खाते खोले गए, आधार और मोबाइल के साथ जोड़कर उन्हें सीधे लाभ पहुँचाया गया। डिजिटल भुगतान प्रणाली, यूपीआई और भीम ऐप ने आम नागरिक को आर्थिक रूप से सशक्त बनाया है और शोषण और भ्रष्टाचार से बचाया है। यह सब उस सोच का विस्तार है, जिसमें बाबा साहेब आर्थिक सशक्तिकरण को सामाजिक मुक्ति का आधार मानते थे।

इसके साथ ही, आधारभूत संरचना के क्षेत्र में जो व्यापक परिवर्तन हुए हैं, वे भी उल्लेखनीय हैं। प्रधानमंत्री गति शक्ति, भारतमाला, सागरमाला और राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स नीति जैसी योजनाएँ देश को नई गति प्रदान कर रही हैं। यह सब केवल विकास परियोजनाएँ नहीं, बल्कि एक मजबूत और आत्मनिर्भर भारत की नींव हैं, जो बाबा साहेब के आर्थिक दृष्टिकोण के अनुरूप हैं।

जहाँ आज का भारत बाबा साहेब के सपनों को साकार करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। स्वतंत्रता के बाद लंबे समय तक सत्ता में रही कांग्रेस ने उन्हें वह सम्मान नहीं दिया, जिसके वे हकदार थे। उन्हें चुनावों में हराने के प्रयास हुए, संसद में उनकी उपेक्षा की गई और उनके विचारों को पर्याप्त महत्व नहीं दिया गया। कॉंग्रेस ने बाबासाहेब के जीवित और मरने के बाद राजनैतिक और सामाजिक जीवन समाप्त करने के लिए एक बार नहीं, बहुत बार प्रयास किए।

इतना ही नहीं, बाबा साहेब को उनके जीवनकाल में भारत रत्न से भी वंचित रखा गया और उनकी स्मृति से जुड़े स्थलों की उपेक्षा की गई। यह एक ऐसा ऐतिहासिक तथ्य है, जिसे नकारा नहीं जा सकता। वर्षों तक उनके योगदान को सीमित रखने का प्रयास किया गया, जिससे नई पीढ़ी उनके वास्तविक महत्व से परिचित नहीं हो सकी। इसके विपरीत, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार ने बाबा साहेब को सच्चे अर्थों में राष्ट्रीय सम्मान दिलाने का कार्य किया है। पंचतीर्थ का निर्माण,

लंदन स्थित उनके निवास को अंतरराष्ट्रीय स्मारक में परिवर्तित करना, संविधान दिवस की शुरुआत, संयुक्त राष्ट्र में उनकी जयंती का आयोजन—ये सभी पहल इस बात का प्रमाण हैं कि सरकार उनके विचारों को वैश्विक स्तर पर स्थापित करने के लिए प्रतिबद्ध है।

सामाजिक न्याय को सशक्त बनाने के लिए भी कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग को संवैधानिक दर्जा देना, एससी/एसटी अत्याचार निवारण कानून को सख्त बनाना, तथा आरक्षण को आगे बढ़ाना—ये सभी निर्णय बाबा साहेब के उस सपने को साकार करते हैं, जिसमें हर वर्ग को समान अवसर मिले।

महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय प्रगति हुई है। बाबा साहेब महिलाओं के अधिकारों के प्रबल समर्थक थे और उन्होंने समान नागरिक संहिता जैसे विषयों पर अपने विचार स्पष्ट रूप से रखे थे। आज महिलाओं को राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक अधिकार प्रदान करने की दिशा में जो कदम उठाए जा रहे हैं, वे उनके विचारों का ही विस्तार हैं।

आज भारत 'विकसित भारत 2047' के लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है। यह केवल एक आर्थिक लक्ष्य नहीं, बल्कि एक सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन का भी प्रतीक है। यह वह भारत है, जहाँ हर व्यक्ति को समान अवसर मिलेगा, जहाँ विकास समावेशी होगा और जहाँ राष्ट्र आत्मनिर्भरता के मार्ग पर आगे बढ़ेगा। मिशन 2047 अंतर्गत भारत सरकार ने विकसित भारत बनाने का संकल्प लिया है,जिसमें डॉ. अंबेडकर का आर्थिक चिंतन और उनके विचारों में समानता अर्थात समान अवसरों की उपलब्धता, शिक्षा और आत्मनिर्भरता तीन एसे स्तंभ है जिन पर विकसित भारत खड़ा हो सकता है यानी सशक्त समाज और समृद्ध भारत ! बाबासाहेब डॉ अंबेडकर जी का दृष्टिकोण स्पष्ट था कि यदि सामाजिक समानता और आर्थिक न्याय साथ-साथ चले तभी भारत वास्तव में विकसित राष्ट्र बन सकता है द्यउनका सपना आज भी हमारे मिशन 2047 के लिए प्रेरणा स्रोत है द्य

अंततः, बाबा साहेब का सपना केवल सरकारों के प्रयासों से नहीं, बल्कि हर नागरिक की भागीदारी से ही साकार होगा। हमें उनके विचारों को अपने जीवन में उतारना होगा और राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभानी होगी। आज का भारत एक नए आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ रहा है—एक ऐसा भारत, जो अपने अतीत से प्रेरणा लेकर भविष्य की ओर दृढ़ता से कदम बढ़ा रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में यह यात्रा केवल विकास की नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय और राष्ट्रीय गौरव की भी है। यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी उस महान युगपुरुष को, जिसने हमें समानता, न्याय और स्वाभिमान का मार्ग दिखाया।

श्री लाल सिंह आर्य,
राष्ट्रीय अध्यक्ष अनुसूचित जाति मोर्चा, भाजपा

पुस्तक समीक्षा

'दूध का दूध पानी का पानी' व्यंग्य की गहरी चोट

व्यंग्य और व्यंग्यकार का नाम सुनते ही लोग भयभीत हो जाते हैं। सोचते हैं पता नहीं यह किसकी बखिया उधेड़ दे। हो सकता है यह किसी को पूरा नंगा करके उसकी रही-सही इज्जत उतार दे या उसका पानी उतार दे। इसलिए लोग व्यंग्य और व्यंग्यकार से ऐसे डरते हैं जैसे लोग पुलिस से डरते हैं। लेकिन व्यंग्यकार पुलिस को भी लताड़ देता है और उसकी खाल खींचने में संकोच नहीं करता।

डॉ.महेन्द्र अग्रवाल ऐसे ही व्यंग्यकार हैं। वे किसी को छोड़ते नहीं हैं। खोजी पत्रकार की तरह इधर-उधर सूंघते रहते हैं और अक्सर उन्हें कोई न कोई शिकार मिल ही जाता है। जैसे ही शिकार मिला, झपट्टा मारकर उसे अपने कब्जे में लेकर फिर उसका पोस्टमार्टम अकेले ही कर डालते हैं। जो भी अनैतिकता के धंधे में लिप्त रहता है चाहे वह डॉक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर, पत्रकार, वकील, पुलिस, साहित्यकार या व्यवसायी हो या धर्म, राजनीति और समाज से जुड़े लोग हों या अन्य वर्गीय चरित्र। वे सभी के कारनामों की पोल अपने विशेष अंदाज़ में खोल देते हैं। इन्हें हम पोल खोलू व्यंग्यकार कह सकते हैं।

महेन्द्र जी अपने व्यंग्य साहित्य में मुहावरों का प्रयोग बहुत करते हैं। कुछ व्यंग्य तो पूरी तरह से व्यंग्य प्रधान होते हैं। इस दृष्टि से समीक्ष्य कृति के नंगा नहाये निचोड़े क्या, सेवा कर मेवा मिलेगी, दूध का दूध पानी का पानी, मुहावरों के राजनीति में अर्थ, लोकतंत्र से लठ्ठतंत्र की ओर, घड़ी घड़ी में बदलती है घड़ी इत्यादि व्यंग्य महत्वपूर्ण हैं। शब्दों से खेलना महेन्द्र जी का शग़ल है। लगभग सभी व्यंग्यों में वे शब्दों से खेलकर व्यंग्य को धारदार बना देते हैं ,साथ ही रोचक भी। इस दृष्टि से ' घोड़ा-एक शब्द अनेक आयाम व्यंग्य उल्लेखनीय है ।मुहावरों के प्रयोग से व्यंग्य में लाक्षणिक गुण आ जाने से वह और अधिक प्रभावी और मारक हो जाता है लेकिन मुहावरों की भरमार व्यंग्य को बदसूरत भी कर देती है। इससे व्यंग्यकार को बचना चाहिए। अति सर्वत्र वर्जयते। इस उक्ति के पालन से व्यंग्य में स्वाभाविक चमक बनी रहती है अन्यथा वह महाकवि केशव की कविता की तरह बोझिल हो जाती है।

इस संग्रह के लगभग सभी व्यंग्य अपनी विशिष्ट शैली के कारण अपनी बात कहने में अच्छी तरह सफल हुए हैं। वे सनसनीखेज खबर की तरह न होकर शांत भाव से गहरी चोट करते प्रतीत होते हैं। वे अपना काम बहुत ही इत्मीनान और खामोशी से करते हैं इससे पाठक भी तिलमिला जाता है। 'केशव केशन असि करी ' का व्यंग्य हमारे अंतस में गुदगुदी पैदा कर देने में पूर्णतः सफल हुआ है -' अब तो अनेकानेक रंग, डाई, जैल, शैम्पू या अन्य सौन्दर्य प्रसाधन बाजार में आ गये हैं जो दस पांच मिनट में ही बालों को काला कर बूढ़ों को भी जवान बना देते हैं। किन्तु प्राचीन काल में केश रंगने के लिए किसी रंग की खोज क्यों नहीं हुई? केशव के समय यदि हेयर डाई का आविष्कार हो गया होता तो हिंदी साहित्य इस खूबसूरत दोहे के आविष्कार से वंचित हो जाता।' एक व्यंग्य है - मुहावरों के राजनीति में अर्थ। इसमें व्यंग्य का चुटीलापन उल्लेखनीय है । जैसे -' जिनकी पीढ़ियां झूठ बोलते हुए गुजर गयीं। राजनीति में जिनकी एक मात्र योग्यता ही झूठ बोलना है। अब तो सभी प्रवक्ताओं और नेताओं में जैसे होड़ सी लग जाती है कि कौन किससे बढ़िया और टीनोपाल की चमकार सा सफेद झूठ बोल सकता है। 'कहीं - कहीं भाषा का सौन्दर्य व्यंग्य की अर्थवत्ता में वृद्धि कर उसके सौन्दर्य को द्विगुणित कर देता है। यथा - लोकतंत्र भीड़ की बैशाखी पर टिका है। इसी तरह पहले वैश्य व्यपार करते थे अब राजनीति करते हैं। भीड़ की महिमा है जो रंक को राजा बना देती है। इस तरह के वाक्य व्यंग्य को असरदार बना देते हैं। कुल मिलाकर 45 छोटे -छोटे व्यंग्य पाठक को ऊबने नहीं देते। छोटे और सरल भाषी होने के कारण ये व्यंग्य पठनीय हैं।

डॉ. अवधेश कुमार चंसौलिया,
दीनदयाल नगर गोले का मंदिर ग्वालियर म.प्र.
दूध का दूध और पानी का पानी / डॉ.महेंद्र अग्रवाल /
प्रथम संस्करण 2025 /पृष्ठ 122 /मूल्य 230 रुपये/क्राउन पब्लिशिंग छत्तीसगढ़

श्रद्धांजलि | ▸ समसामयिकी लेखक - राजेश कुमरावत 'सार्थक'

दम मारो दम... से दिल चीज़ क्या है... तक कैसे एक आवाज़ बनी भारत की सांस्कृतिक पहचान

- चली गई अनमोल आशा...
- राष्ट्र और संस्कृति के बीच सेतु बनी आवाज़
- जिसने हर पीढ़ी को एक सूत्र में जोड़ा

भारतीय संगीत जगत में जब भी सुरों की विरासत की बात होगी, तो आशा भोसले का नाम एक ऐसी धारा के रूप में लिया जाएगा, जिसने समय, समाज और संवेदनाओं को अपनी आवाज़ में पिरो दिया। यह केवल एक गायिका की यात्रा नहीं थी, बल्कि उस भारत की कहानी थी, जो बदलते हुए भी अपनी आत्मा से जुड़ा रहा।

'दम मारो दम, मिट जाए ग़म... '–यह केवल एक गीत नहीं था, बल्कि उस दौर की युवा चेतना की अभिव्यक्ति था, जब समाज अपने भीतर के द्वंद्व से जूझ रहा था और नई राहें तलाश रहा था। इस गीत ने उस बेचैनी, उस विद्रोह और उस स्वतंत्र सोच को स्वर दिया, जो एक नई पीढ़ी की पहचान बन रही थी। 'अभी तो कुछ कहा नहीं, अभी तो कुछ सुना नहीं... '–यह पंक्ति आज हर उस श्रोता के मन में गूंज रही है, जिसने उनके गीतों के साथ अपने जीवन के अनगिनत क्षण जिए हैं। ऐसा लगता है मानो समय ने अचानक एक ऐसी धारा को रोक दिया हो, जो निरंतर बहते हुए पीढ़ियों को जोड़ती चली जा रही थी। इसी आवाज़ ने जब 'ये मेरा दिल, प्यार का दीवाना...' जैसे गीतों में रूप लिया, तो वह आधुनिक भारत की ऊर्जा, आत्मविश्वास और बदलते सामाजिक परिवेश का प्रतीक बन गई। यहां एक ऐसी स्त्री स्वर उभरकर सामने आता है, जो संकोच से नहीं, बल्कि आत्मविश्वास से भरा हुआ है।

फिर वही स्वर जब 'दिल चीज़ क्या है, आप मेरी जान लीजिए...' में ढलता है, तो भारतीय शास्त्रीयता, तहज़ीब और भावनाओं की गहराई अपने चरम पर दिखाई देती है। यह गीत केवल संगीत नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति की नजाकत और आत्मिक सौंदर्य का सजीव चित्रण है। और जब समय आगे बढ़ता है, तो 'मेरा कुछ सामान तुम्हारे पास पड़ा है...' जैसे गीतों में वही आवाज़ रिश्तों की जटिलता, स्मृतियों की गहराई और जीवन की सूक्ष्म संवेदनाओं को छूती है। यह वह पड़ाव है, जहां संगीत केवल सुनाई नहीं देता, बल्कि भीतर उतरकर आत्मा को स्पर्श करता है।

यही वह यात्रा है, जो यह सिद्ध करती है कि आशा भोसले केवल एक युग की नहीं, बल्कि हर युग की आवाज़ थीं। उन्होंने न केवल समय के साथ स्वयं को बदला, बल्कि हर परिवर्तन को स्वीकार करते हुए उसे अपनी कला का हिस्सा बना लिया। यही कारण है कि उनका स्वर कभी पुराना नहीं पड़ा–वह हर दौर में नया और प्रासंगिक बना रहा।

भारत जैसे विविधताओं से भरे राष्ट्र में, जहां हर भावना, हर भाषा और हर संस्कृति का अपना अलग स्वरूप है, वहां एक कलाकार का इन सभी को एक साथ समेट लेना असाधारण होता है। आशा भोसले ने यह कार्य सहजता से किया। उनकी आवाज़ वास्तव में संस्कृति की विविधता में एकता का स्वर बन गई–एक ऐसा स्वर, जिसमें पूरा भारत स्वयं को महसूस कर सकता है। उन्होंने भले औपचारिक रूप से राष्ट्रगीत न गाए हों, लेकिन उनके गीतों में वह भारत गूंजता था, जो जीवंत है, संघर्षशील है और निरंतर आगे बढ़ता है। यही वह क्षण है, जहां यह स्पष्ट होता है कि जब संगीत राष्ट्र का दर्पण बनता है, तब वह केवल मनोरंजन नहीं रहता, बल्कि समाज की आत्मा का प्रतिबिंब बन जाता है।

आज के समय में, जब संगीत भी त्वरित प्रसिद्धि और क्षणिक प्रभाव का माध्यम बनता जा रहा है, तब आशा भोसले की यह यात्रा हमें ठहरकर सोचने के लिए प्रेरित करती है। यह हमें याद दिलाती है कि सच्ची कला समय की सीमाओं से परे होती है और उसकी गूंज पीढ़ियों तक सुनाई देती है।

अंततः, यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि 'दम मारो दम...' से 'दिल चीज़ क्या है...' तक की यह यात्रा केवल गीतों की श्रृंखला नहीं, बल्कि भारतीय समाज, संस्कृति और संवेदनाओं की एक जीवंत कथा है। कुछ आवाज़ें केवल गाई नहीं जातीं, वे समय के साथ जीती हैं, और फिर इतिहास बन जाती हैं। आशा भोसले की आवाज़ भी ऐसी ही अमर धरोहर है–जो हर पीढ़ी के दिल में, हर युग की स्मृतियों में और भारत की सांस्कृतिक आत्मा में सदैव गूंजती रहेगी।

आज जब हम उनके जाने के बाद उत्पन्न इस शून्य को महसूस कर रहे हैं, तो यह केवल शोक का विषय नहीं, बल्कि एक गंभीर आत्ममंथन का अवसर भी है। वर्तमान समय में, जब कला भी क्षणिक लोकप्रियता की दौड़ में शामिल होती जा रही है, तब यह आवश्यक हो जाता है कि हम उस साधना, उस गहराई और उस सांस्कृतिक प्रतिबद्धता को पुनः समझें, जिसने आशा भोसले को इतना महान बनाया।

अभी तो कुछ सुना नहीं...–यह अधूरापन शायद हमेशा बना रहेगा। परंतु यह भी उतना ही सत्य है कि कुछ आवाज़ें कभी समाप्त नहीं होतीं। वे समय के पार जाकर स्मृतियों में जीवित रहती हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनती हैं। आशा भोसले की आवाज़ भी ऐसी ही अमर धरोहर है, जो भारतीय संस्कृति के आकाश में सदैव गूंजती रहेगी।

आज की पीढ़ी के लिए यह क्षण केवल शोक का नहीं, बल्कि एक गंभीर चेतावनी का भी है। जिस दौर में कला को 'ट्रेंड' और 'वायरल' की सीमाओं में बांधा जा रहा है, वहां यह समझना आवश्यक है कि सच्ची पहचान क्षणिक लोकप्रियता से नहीं, बल्कि साधना, गहराई और सांस्कृतिक जुड़ाव से बनती है। यदि हम अपनी विरासत की ऐसी आवाज़ों को केवल अतीत मानकर भूलते गए, तो आने वाला समय हमें केवल तकनीक में समृद्ध, लेकिन संवेदनाओं में दरिद्र बना देगा। यह समय है ठहरकर सुनने का, समझने का और यह स्वीकार करने का कि कुछ स्वर केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि हमारी पहचान की नींव होते हैं।

इनसे यह संदेश दें कि–'भारत की ताकत उसकी विविधता में है, और आशा भोसले उस विविधता की आवाज़ हैं। '

सुरों की मलिका आशा भौंसले

मशहुर गायिका,, आवाज की दुनिया की जादुगर और पार्श्व गायिका आशा भोंसले का जन्म 8 सितंबर 1933 को मशहुर थिएटर एक्टर और क्लासिकल सिंगर पं दीनानाथ जी मंगेशकर के घर सांगली में हुआ था ! वे दुनिया की मशहुर गायिका और सात सुरों की मलिका लता मँगेशकर जी की छोटी बहन है! आशाजी जब वर्ष की थी ,, तभी उनके पिता का देहांत हो गया था! उषा भौंसले उनकी बहन है!

लता जी जब पहले दिन स्कुल गई तो,, छोटी बहन आशा को अपने साथ लेकर गई,, परन्तु वहां के स्कुल स्टाफ ने उन्हें कहा कि,, एक फीस में सिर्फ एक ही को स्कुल में? प्रवेश मिलेंगा! इस के बाद आर्थिक अभाव के कारण लता मँगेशकर जी ने स्वयँ स्कुल न जाकर आशा जी को स्कुल भेजा! लता जी सिर्फ दो ही दिन स्कुल गई है! पालन पोषण सँगीत मय माहौल में हुआ!

आशा भोंसलें अपने छोटे भाई हृदयनाथ को गोद में लेकर घर के सारे काम? किया करती थी! आशा जी चाहती तो,, लता की तरह , उन्ही के तरीके से गीत गा सकती थी,, परन्तु उन्होंनें अपनी अलग स्टाईल,, तरीका व पहचान बनाई ! वे 1945 में मुंबई आई! 1948में सावन आया , गीत से शुरुआत की ! आशा जी जब 16वर्ष की थी तब अपने सेक्रेटरी गनपतराव भोंसले से शादी की थी,, उस समय गनपत राव की उम्र 31 वर्ष थी! यह शादी11साल तक रही, इस बीच इन्हें तीन बच्चे हेमंत कुमार, आनंद और बेटी वर्षा! उनकी? दुसरी शादी आर*डी* बर्मन से हुई! वे एस : डीः बर्मन के बेटे थे! पहली शादी के 20साल बाद 1980में उन्होनें राहुल देव बर्मन से शादी कीथी! आशा भोंसलें उस समय 47की और पंचम दा 41 वर्ष के थे! शादी के 14वर्ष बाद आर, डी, बर्मन का निधन हो गया! उन्होनें कड़ी मेहनत से अपनी जगह खुद बनाई!! आज 90 वर्ष की उम्र में?भी वे हर दिन रियाज़ करती है! उन्होंनें 20 भाषाओं में 16 हज़ार से भी ज्यादा फिल्मीऔर गैर फिल्मी गीत गाए हैं,, उन्हें दादा साहब फालके और पद्म?? विभुषण व कई अन्य प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त हुए! उन्होने लगभग 12000 गीत गाए है, परन्तु गत 12 अप्रेल को बिमारी? के कारण उनका निधन हो गया! उन्हें आदरांजलि एवं भावभीनी विदाई व नमन् !!

संजय जांगजुड़े,, संजू, दादाबाड़ी के पास,, वारासिवनी
9993676194 मध्य प्रदेश